4 उद्योग एक परिचय

हमारा देश कृषि प्रधान है। यहाँ कृषि पर आधारित अनेक उद्योग धंधे विकसित हैं। फसल उगाना कृषि कार्य है और उन उत्पादित फसलों से अन्य किस्म की वस्तुएँ बनाना उद्योग का कार्य है। उद्योग–धंधे मानव, मशीन तथा विद्युत से संचालित किए जाते हैं।

नीचे दी गई वस्तुओं में से खेती से प्राप्त एवं मशीनों से प्राप्त वस्तुओं की अलग–अलग सूची बनाइए–

शक्कर, डबल रोटी, गेहूँ, गन्ना, सेब, कपड़ा, कपास, लकड़ी, आलू, बाँस, बाल्टी, टी.वी, मोबाइल, कम्प्यूटर, रेलगाड़ी, आम, शहतूत, पोहा, कागज, प्लास्टिक के सामान।

खेती से प्राप्त वस्तुएँ	मशीनों से प्राप्त वस्तुएँ

कच्चा माल

उद्योगों में कच्चे माल की प्रमुख आवश्यकता होती है जैसे– कपड़े के लिए कपास, शक्कर के लिए गन्ना, कागज के लिए लकड़ी आदि।

उद्योग में कई वस्तुएँ तैयार होती हैं उन्हें तैयार करने के लिए जिन वस्तुओं का उपयोग होता है उन्हें कच्चा माल कहते हैं।

चित्र 4.1 दस्तकारों के अलग–अलग काम

उद्योग में उत्पादन कई तरह से होता है। कहीं व्यक्तियों के द्वारा तो कहीं मशीनों के द्वारा। मिट्टी के बर्तन, बीड़ी, टेबल, कुर्सी, दोना–पत्तल, रेशम, कढ़ाई–बुनाई, सूपा–टोकरी इत्यादि बनाने का कार्य मानव शक्ति से किए जाते हैं तथा प्लास्टिक का सामान और खिलौने आदि मशीनों के द्वारा बनाए जाते हैं। लोगों के द्वारा बनाई जाने वाली सामानों को दस्तकारी के काम कहते हैं। आइए हम कुछ ऐसे ही दस्तकारों के बारे में पढ़ेंगे ये दस्तकार कहाँ काम करते हैं। उत्पादन करने का तरीका क्या है? सामान को कैसे बेचते हैं और उनके कार्यों में क्या परिवर्तन आ रहे हैं? कुम्हार (कुम्भकार) भी एक दस्तकार है जो नदी के किनारे से मिट्टी लाता है, छानता है, गूँथता है और एक दो दिन में जब मिट्टी तैयार हो जाती है तब वह घूमते हुए चाक पर मिट्टी से मटके और अन्य बर्तन बनाता है। इन बर्तनों के अलावा भी कुम्भकार मिट्टी से कलात्मक और सजावट की वस्तुएँ भी बनाता है।

चित्र 4.2 चाक पर बर्तन बनाते हुए

ये वस्तुएँ काँप मिट्टी से बनाई जाती हैं जो कि मुलायम व चिकनी होती है। यह मिट्टी सभी जगह नहीं मिलती। छत्तीसगढ़ राज्य में महानदी और उसकी सहायक नदियों के किनारे इस प्रकार की मिट्टियाँ पाई जाती हैं। जहाँ कुम्भकारों के समूह एक साथ निवास करते हैं।

मिट्टी से बनी हुई वस्तुओं की सूची बनाइए।

अब तो बर्तन बनाने के लायक मिट्टी भी दूर–दूर तक नहीं मिलती क्योंकि आजकल नदियों के किनारे अधिकांश मात्रा में प्लास्टिक और कचरे मिलने के कारण अच्छी मिट्टी नहीं मिल पा रही है। गाँव में जहाँ सरकारी जमीन है अब कुम्भकार वहाँ से मिट्टी खोदकर लाते हैं अथवा जमीन के मालिकों से प्रति ट्रेक्टर गाड़ी की दर से मिट्टी खरीदते हैं। यह मिट्टी नदी किनारे की मिट्टी की तरह बर्तन बनाने में उपयोगी तो नहीं होती परन्तु काम चल जाता है।

चित्र–4.3 नंदी बैल–खिलौना व अन्य सजावटी सामान

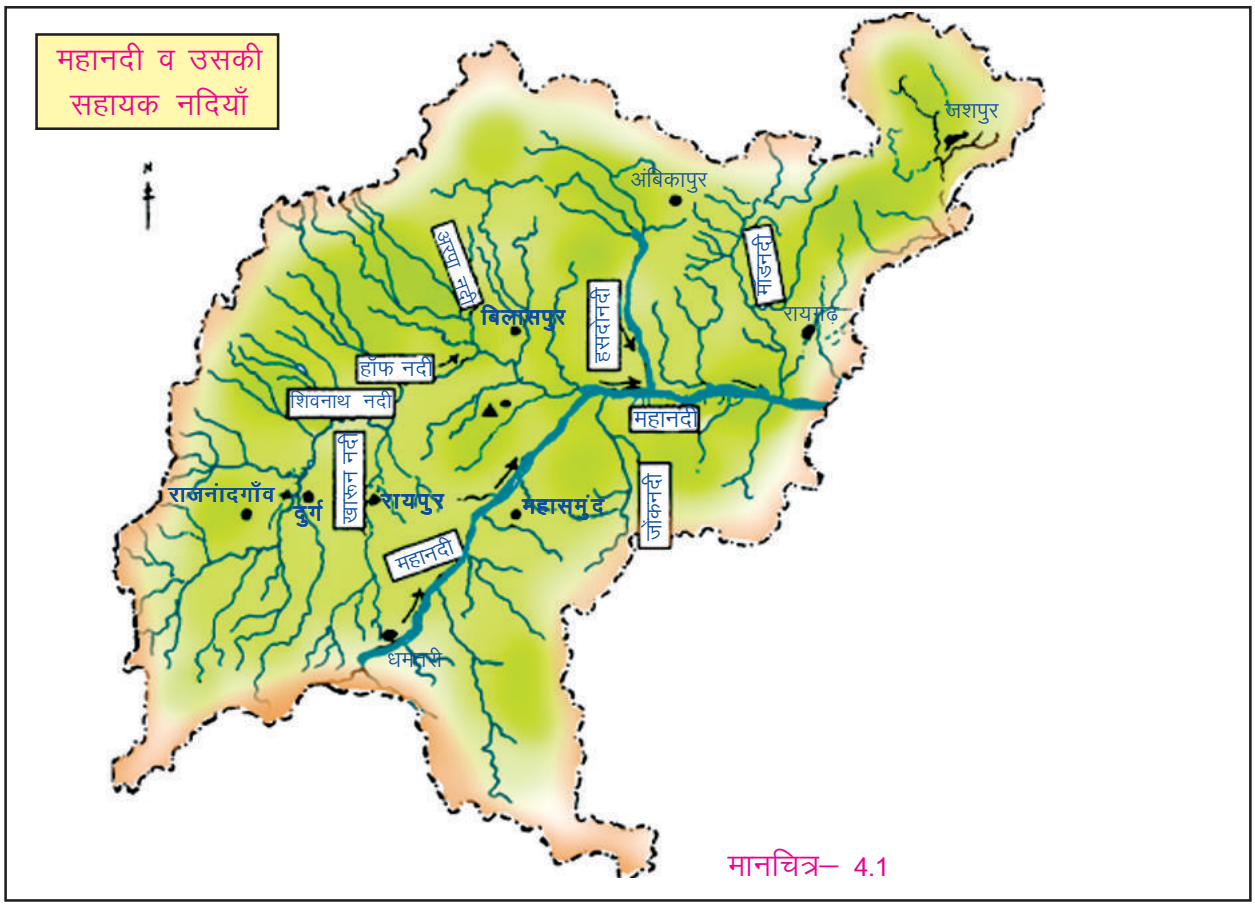

मानचित्र– 4.1

1. कुंभकार के लिए कच्चा माल क्या है? वह इसे कैसे प्राप्त करता है ?
2. कुंभकार को कच्चा माल प्राप्त करने के लिए क्या–क्या समस्याएँ आ रही हैं ?
3. मानचित्र 4.1 में महानदी व उसकी सहायक नदियों के नाम ढूँढ़ें।

चित्र– 4.4 भट्टी में पकता हुआ सामान

चित्र–4.5 बस्तर के बने हुए मिट्टी के सामान

पता करें–

1. अपने आसपास के गाँवों में जाकर देखिए कि कहाँ–कहाँ मिट्टी का सामान बनता है। इन बर्तनों के अलावा और कौन–कौन–सी वस्तुएँ बनाई जाती हैं और उन्हें कहाँ बेचा जाता है? (सूची बनाइए)

छत्तीसगढ़ में अन्य दस्तकार –

ऐसे ही एक अन्य दस्तकार जो ठेकेदार व्यापरियों से कच्चा माल लेकर चीजें बनाते हैं और उन्हीं को अपना तैयार माल बेचते हैं। यह प्रथा रेशम उद्योग में देखी जा सकती है। अपने राज्य में भी रेशम उद्योग काफी फैला हुआ है। यहाँ के तैयार रेशमी कपड़ों को कोसा के नाम से जाना जाता है तथा इससे संबंधित उद्योग कोसा उद्योग के नाम से मशहूर है।

शहतूत, अर्जुन, साजा और साल के पेड़ों पर रेशम के कीड़े पलते हैं या लोगों द्वारा पाले जाते हैं। कीड़े की इल्लियाँ शहतूत के पत्तों को खाकर अपने चारों और अपनी लार से धागा के रूप में एक खोल तैयार करती है। इस खोल को कोसा फल या 'कोकून' कहते हैं। इसी कोकून से रेशम के धागे तैयार किए

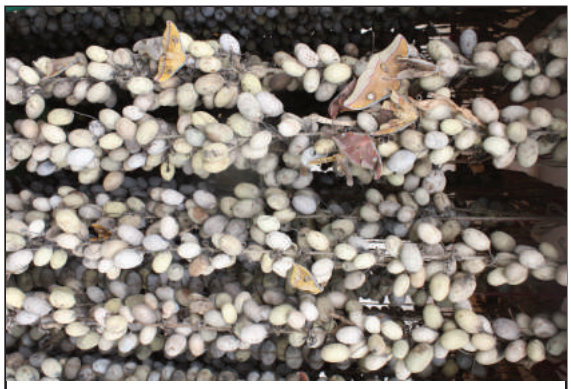

चित्र – 4.6 कोकून (कोसा–फल)

चित्र –4.7 व्यापारी के घर बुनकरों की भीड़

जाते हैं। कोसा के कपड़े बनाने के लिए बुनकर को छोटा व्यापारी कोसा फल और तने का धागा देता है।

बुनकर व उसके परिवार कटे–फटे कोसा फल को छांटकर अलग कर अच्छे कोसा फल के ऊपर पट्टा (पेसट) लपेटते हैं ताकि कोसा फल को उबालते समय वह फटने न पाए। उसके बाद कोसा फलों को एक मिट्टी के घड़े में 1 लीटर पानी में 100 ग्राम कपड़ा धोने का सोडा मिलाकर चूल्हे पर चढ़ा दिया जाता है। इसे दो तीन घंटे

चित्र–4.8 कोकून को उबालना

उबालने के बाद उबले कोसा फल को साफ पानी से इतना धोया जाता है कि कोसा फल की ऊपरी सतह में लगा हुआ चिपचिपा पदार्थ पूरी तरह से निकल जाए जिससे कोसा फल आसानी से धागा निकालने लायक बन जाए।

चित्र–4.9 नटवा

इसके बाद कण्डे की राख पर कपड़ा फैलाकर उस पर उबले हुए कोसा फल को सुखाने के लिए रख दिया जाता है। कुछ समय बाद उन फलों को एक गीले कपड़े में लपेटकर रखा जाता है। फिर कोसा फलों से धागा निकालने का काम शुरू होता है। कोसा फलों को एक प्लेट में रखा जाता है। उन फलों में से एक –एक कर धागा निकालते हैं। बुनकर व उसके परिवार के लोग अपनी जांघ पर रखकर रगड़कर नटवा पर धागा लपेटते हैं।

धागा निकालने का काम आम तौर पर महिलाएँ ही करती हैं। नटवा में धागे लपेटने के बाद चरखे के पास बैठकर बॉबीन में धागा चढ़ाया जाता है।

उसके बाद ताना पर धागा बाँधने का काम शुरू किया जाता है। ये धागे 35 से 37 मीटर तक लंबे होते हैं और सीधे लंबाई में बाँधे जाते हैं। इसमें लगभग 3840 मीटर लम्बे धागे होते हैं जिसे बाँधने में एक दिन से अधिक का समय लग जाता है।

चित्र–4.10 आधुनिक चरखा

बुनाई के समय एक दूसरा धागा चौड़े भाग में लगता है। इसे बाना कहते हैं। ताने और बाने की सहायता से ही कपड़े की बुनाई होती है। पहले ताना और बाना दोनों में कोसा धागे का ही उपयोग होता था लेकिन अब कोसे के कपड़े की मांग अधिक हो जाने के कारण ताने का धागा बाहर से मंगाना पड़ता है। इस तरह के धागे को कोरिया धागा कहते हैं क्योंकि यह चीन या कोरिया देश से मंगाया जाता है। बुनकरों को यह धागा व्यापारियों के द्वारा उपलब्ध कराया जाता है।

चित्र–4.11 हैंडलूम (हाथ–करधा) का चित्र

एक थान कपड़ा बुनने में 6 से 8 दिन का समय लग जाता है। अगर कभी ज्यादा डिजाइन डालनी होती है तो और भी ज्यादा समय लग जाता है। इस तरह हमने देखा कि कोसा के कपड़े संबंधित सभी काम बुनकर परिवार के लोगों द्वारा किया जाता है। इसके लिए उन्हें अलग से मजदूर रखने की आवश्यकता नहीं पड़ती।

कक्षा में चर्चा करें –

कोसा उद्योग में कच्चा माल किसका है, औजार किसके हैं, कपड़ा तैयार करने में श्रम किसका लगा, बुना कपड़ा क्या कहलाता है ?

छोटे व्यापारी बनुकरों से बुने हुए कपड़ा लेते हैं तथा उनका हिसाब–किताब रखते हैं। आवश्यकता पड़ने पर उन्हें नई डिजाइनें बताई जाती है तथा आगे के आर्डर के मुताबित उन्हें कोसा फल कोरियाई धागा दिया जाता है। छोटा व्यापारी बड़े व्यापारी को आर्डर के अनुसार कपड़े उपलब्ध कराता है।

इसी प्रकार बड़े शहरों के बाजारों में कोसा कपड़े ऊँचे दामों में बिकते हैं। बड़े व्यापारी कई शहरों एवं विदेशों में अपने माल की बिक्री के लिए बाजार खोजते हैं एवं डिजाइनरों की व्यवस्था भी करते हैं।

छत्तीसगढ़ में अन्य दस्तकार –

कुम्भकार व बुनकर के अलावा अन्य दस्तकार हैं जैसे जुलाहा, कपड़े पर छपाई करने वाला रंगरेज, बाँस की टोकरियाँ एवं अन्य चीजें बनाने वाले बसोड़, बर्तन बनाने वाले कसेर, लोहे का सामान बनाने वाले लोहार, रजाई, गद्दे बनाने वाले पिंजारे आदि। वस्तुओं का उत्पादन दस्तकारों द्वारा भी किया जाता है। वे अपने घर पर अपने स्वयं के औजारों का उपयोग कर वस्तुएँ बनाते हैं। इसके लिए काम का समय भी वे स्वयं तय करते हैं। उसके इस कार्य में उसके घर परिवार के अन्य सदस्य सहयोग करते हैं। इन्हें इस काम की पारंपरिक कला का ज्ञान है। दस्तकार स्वयं अपने पैसों से कच्चा माल खरीदते हैं और सामान बनाकर बेचने की व्यवस्था करते हैं। फायदा या नुकसान दस्तकार को स्वयं उठाना पड़ता है।

वैसे तो सही कीमत वस्तुओं को स्वयं बेचने से ही प्राप्त होती है। लेकिन इनको अपने सामानों की सही कीमत प्राप्त नहीं होती है। उनकी तुलना में व्यापारी इन्हें कम कीमत में खरीदता है। कुछ छोटे व्यापारी (बिचौलिये) भी वहाँ से सामान खरीदकर बड़े व्यापारी को बेचते हैं। इसी तरह सामान उपयोग करने वाले तक पहुँचता है।

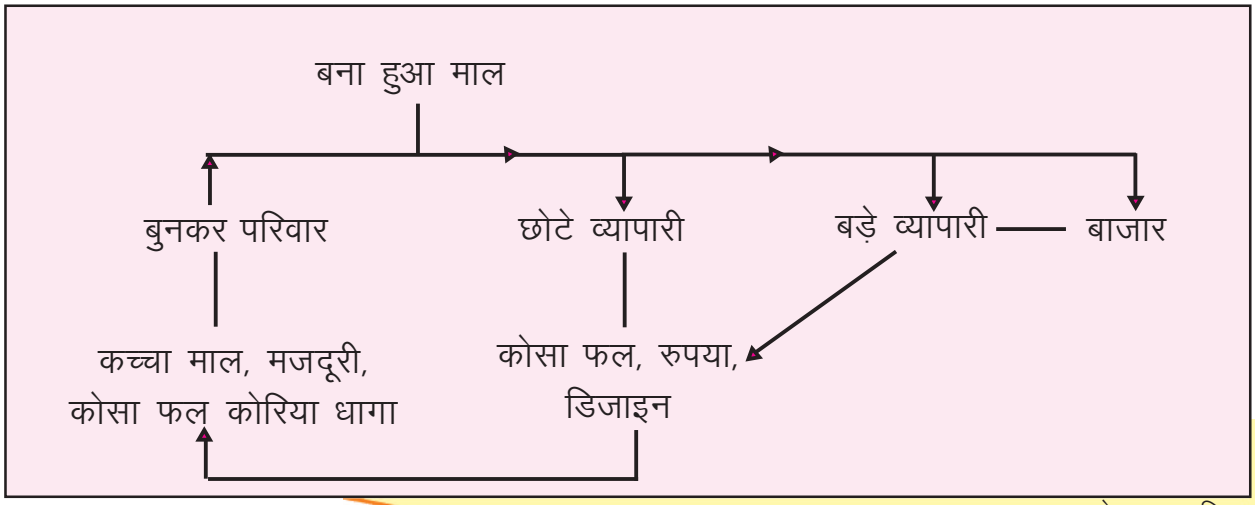

दस्तकारों के काम में परिवर्तन लाने के लिए छत्तीसगढ़ सरकार ने राजस्थान की कुछ कुंभकारों से कलाकृतियाँ बनाने का प्रशिक्षण दिलवाया इससे ये लोग सजावटी समान ही बनाने लगे हैं एवं इनकी मांग शहरों में भी हो रही है। इसे टेराकोटा उद्योग कहा जाता है जैसे हण्डी, पोरा बैल, कलात्मक एवं सजावटी सामान, लैम्प, गमला, घण्टी, मुखौटे आदि बना लेते हैं जो जगार उत्सव व अन्य हाट बाजारों में खूब बिकते हैं। सरकार ने कुम्भकारों को मशीन से चलने वाले चॉक दिए हैं ताकि उत्पादन अधिक हो सके।

ठेकेदारी से उत्पादन के अन्य कार्य

ठेकेदारी प्रथा में बाँस से टोकरी बनाना, बीड़ी बनाना, दोना पत्तल बनाना, कपड़ा बुनना आदि कई अन्य काम भी किए जाते हैं। ऐसे उद्योगों में लाखों लोगों को रोजगार मिलता है। इन उद्योगों में सभी काम घर पर किए जाते हैं और पूरा परिवार मिलकर काम करता है। अक्सर व्यापारी या ठेकेदार उन्हें अग्रिम राशि देते हैं या कच्चा माल देते हैं। उन्हें तैयार वस्तु के लिए मजदूरी मिलती है। लेकिन इस व्यवस्था की सबसे बड़ी कमी यह है कि इस काम में लगे परिवारों को अपनी मेहनत का उचित मूल्य नहीं मिल पाता।

इसके विपरीत ठेकेदारी प्रथा में बड़े व्यापारी के लिए दो तरह से सुविधा है– एक, उसे कपड़ा बनाने या किसी भी काम के लिए कोई व्यवस्था अपने कारखाने के अंदर नहीं करनी पड़ती तथा किसी किस्म के औजार आदि भी नहीं देने पड़ते। दूसरा, कारखाने में रखे गए मजदूरों को फैक्ट्री कानून के नियमों के अनुसार वेतन एवं सुविधाएँ मिलने का हक बनता है। जबकि इस तरह, ठेकेदारी प्रथा के अंदर, काम करवाने में बड़े व्यापारी इन्हें अपना मजदूर मानने के लिए तैयार नहीं होते हैं और फैक्ट्री कानून से बच जाते हैं। इस कारण मेहनत करनेवाले दस्तकारों को कानून के तहत जो सुविधाएँ मिलनी चाहिए उससे वे वंचित रह जाते हैं।

यदि आपके परिवार में किसी भी प्रकार के उत्पादन का काम होता है तो उस काम को कैसे किया जा रहा है? उसका बाजार कहाँ है? अपने साथियों को बताएँ।

1. क्या आप दस्तकारों के कामों की विशेषताओं से अपने आसपास के दस्तकारों और उनके द्वारा बनाई जाने वाली वस्तुओं को पहचान सकते हैं ? सूची बनाइए।
2. दस्तकारों के नाम व उनके द्वारा तैयार की जाने वाली वस्तुओं की सूची बनाइए।
3. स्वयं सामान बेचना और व्यापारी को सामान बेचने में क्या अंतर है ?
4. दूर–दूर तक सामान बेचने का क्या कोई और तरीका हो सकता है? चर्चा कीजिए।
5. छोटे व्यापारी बुनकर परिवारों को क्या–क्या देते हैं? पाठ के आधार पर स्पष्ट करें।
6. छोटे व्यापारियों को बुनकरों से क्या प्राप्त होता है?
7. बुनकर अपने द्वारा बुने हुए कपड़ों को स्वतंत्र रूप से क्यों नहीं बेच सकता ?

बाजार व्यवस्था :–

किसी भी वस्तु का उत्पादन करने तथा उसे बेचने के लिए उचित बाजार की व्यवस्था करना भी उद्योग का एक प्रमुख अंग है। इस प्रकार उद्योग को संचालित करने के लिए कच्चा माल जुटाना, सामान तैयार करना तथा बाजार में बेचना आवश्यक है। दस्तकार अपना कुछ सामान स्वतंत्र रूप से बाजारों में घूमकर भी बेचते हैं। इनका सामान आस–पास के इलाकों में ही बिकता है। छत्तीसगढ़ में कुछ ऐसे इलाके भी हैं जो मिट्टी से बने इन सामानों के लिए प्रसिद्ध है। जैसे कोण्डागाँव जिले में कोण्डागाँव, रायपुर जिले में रायपुर नगर के पास खारून नदी के किनारे रायपुरा ग्राम तथा महासमुंद में बरोण्डा बाजार एवं इनके अतिरिक्त बिलासपुर, जांजगीर चांपा, रायगढ़ आदि जिलों के गाँव में भी मिट्टी के सामान बनाए जाते हैं। वैसे ही जांजगीर चांपा जिले में कोसा उद्योग अधिक विकसित है। बस्तर, दंतेवाड़ा जगदलपुर, कांकेर, धमतरी, रायपुर, कबीरधाम, जांजगीर चांपा, बिलासपुर सरगुजा जिलों के जंगलों में उपलब्ध साल, बेर और सेंधा के वृक्षों पर कोसा कीड़े की प्रजातियाँ पायी जाती हैं।

बाजार से बहुत सी वस्तुएँ खरीदते हैं जैसे–चावल,दाल, सब्जियाँ,पुस्तक,कॉपी,पेन,मंजन, बिस्किट,दूध आदि। आइए अब हम बाजार व्यवस्था को जानें–कुछ स्थानों पर साप्ताहिक बाजार , कुछ स्थानों पर स्थायी बाजार और कुछ स्थानों पर बड़े–बड़े शॉपिंग कॉम्प्लेक्स होते हैं। साप्ताहिक बाजार किसी एक निश्चित दिन व निश्चित स्थान पर लगती है जहाँ पर बहुत सी वस्तुएँ अपेक्षाकृत सस्ते दामों पर मिल जाती है साप्ताहिक दुकानदारों को घर के लोग ही मदद करते हैं। वैसे बाजारों में खरीददारों के पास अच्छी वस्तुओं को चुनने के अवसर अधिक मिलते हैं, हमारी आवश्यकता की सभी वस्तुएँ एक ही जगह में मिल जाती है। दस्तकार अपना कुछ सामान स्वतंत्र रूप से इन बाजारों में बेचते हैं जैसे आपने मिट्टी के दस्तकारों के बारे में पढ़ा।

स्थायी बाजार प्रायः शहरी क्षेत्रों में देखने को मिलते हैं जहाँ प्रत्येक वस्तु का बाजार प्रतिदिन लगा होता है। हमारे गाँव –मुहल्ले में भी जो दुकानें होती हैं वे भी स्थायी होती हैं। शॉपिंग मॉल और शांपिंग काम्प्लेक्स बड़े –बड़े शहरों में देखने को मिलते हैं। प्रायः ये बहुमंजिला वातानुकूलित (A.C) दुकानें होती हैं। अलग–अलग मंजिलों पर अलग–अलग वस्तुएँ मिलती हैं।

बड़ी –बड़ी दुकानों व शॉपिंग मॉल में ब्रांडेड सामान मिलते हैं, ब्रांड किसी उत्पाद पर किसी विशेष नाम या चिन्ह की मोहर लगाना जैसे – हिंदुस्तान प्राईवेट लिमिटेड, गुडलैंड, बाटा, एच.एम. टी., फेयरएण्ड लवली, बोरोप्लस आदि।

गाँव मुहल्ले की दुकान

साप्ताहिक बाजार

शॉपिंग मॉल

चित्र–4.12

हमने कोसा उद्योग के बारे में पढ़ा है यहाँ हम कोसा से बनी वस्तुओं को विभिन्न बाजारों से होते हुए उपभोक्ता तक कैसे पहुँचता है। इसका अध्ययन करेंगे :–

कोसा के फल को छोटे व्यापारी खरीदते हैं और उसे बुनकर को धागा बनाने के लिए देते हैं। उनसे धागा बड़े व्यापारी खरीद कर वस्त्र बनुवाते हैं। बने वस्त्रों को थोक बाजार में भेजते है वहाँ से फुटकर बाजार पहुँचता है और अन्त में कोसा वस्त्र उपभोक्ता तक पहुँच जाता है।

थोक बाजार – प्रत्येक शहर में थोक बाजार का एक क्षेत्र होता है जहाँ वस्तुएँ पहले पहुँचती हैं तथा यहीं से वे अन्य व्यापारियों तक पहुँचती हैं। फुटकर खुदरा व्यापारी – अंतिम व्यापारी जो वस्तुएँ उपभोक्ता को बेचता है।

हमारे छत्तीसगढ़ में बने कोसे कपड़े की मांग स्थानीय बाजारों के अतिरिक्त प्रादेशिक एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी है। चेन्नई ,बंग्लुरू, नागपुर,भोपाल आदि स्थानों में छत्तीसगढ़ के कोसा कपड़े की दुकानें हैं। इसी तरह भारत के बाहर जर्मनी,फ्रांस चाइना, मलेशिया जैसे लगभग 38 देशों से इन कपड़ों का व्यापार किया जाता है।

अभ्यास के प्रश्न

LTRHLB

1. खाली स्थान को भरिए –

1. भारत ..... प्रधान देश है।
2. उद्योग धंधे मानव, मशीन तथा ..... से संचालित होता है।
3. कुंभकार के लिए कच्चा माल ..... है।
4. मिट्टी से बने सजावटी सामान को ..... कहते हैं।
5. मिट्टी का घड़ा, सुराही बनाना ..... कहलाता है।
6. ताना पर लगने वाला धागा ..... धागा कहलाता है।
7. रेशम के कीड़े ..... के पेड़ पर पाले जाते हैं।
8. कोकून को उबालने से पहले इस पर ..... लपेटा जाता है।

2. प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. कच्चा माल किसे कहते हैं?
2. दस्तकारी किसे कहते हैं?
3. बाजार किसे कहते हैं?
4. नदी के किनारे की चिकनी मिट्टी से ही बर्तन व अन्य सामान क्यों बनाए जाते हैं?

5. मिट्टी के बर्तन को बेचने के लिए क्या तरीके अपनाए जाते हैं?
6. कुंभकार के काम में किस–किस तरह के परिवर्तन आए हैं? अपने शब्दों में समझाइए।
7. बुनकर परिवार को कोसा फल कहाँ से प्राप्त होता है?
8. बुनकर कोसे का कपड़ा किस प्रकार बनाता है?
9. छोटा व्यपारी क्या–क्या काम करता है?
10. यदि कोसा उद्योग से छोटा व्यापारी हट जाए तो बुनकरों के काम की क्या–क्या विशेषताएँ हैं?

परियोजना – किसी एक दस्तकार के बारे में इन बिन्दुओं पर विस्तार से लिखिए।

1. क्या बनाता है?
2. कच्चा माल क्या है?
3. कैसे बनाता है?
4. सामान कहाँ बेचता है?